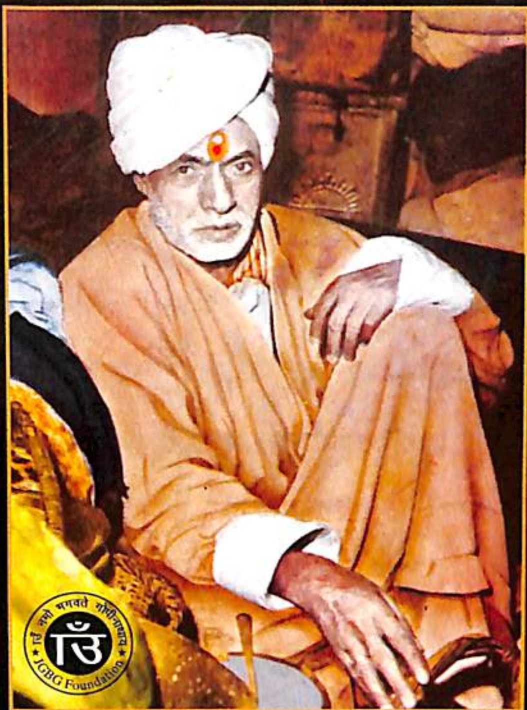
Prakash Bhagavaan Gopinath



भगवान गोपीनाथ शतक

की सीडी तथा कैसेट
श्री अशोक रैना बक्त गायक
की जबानी सिद्ध पीठ उत्तम नगर,
नई दिल्ली से प्राप्त हो सकती है।

श्री भगवान का प्रकाश पाने के लिए
'प्रकाश भगवान गोपीनाथ' हर घर में मंगवाना चाहिए।

भगवान गोपीनाथ जी शतक

अद्वितीय सिद्ध अवधूत ज्ञानी की कथा सुनाते है।
ब्रह्मस्वरूप में लीन, कथा दिव्य पुरूष की सुनाते है।।1।।
अठारा सो अठानवे को, तीन जौलाई को था जन्मा।
बाण मौहल्ला श्रीनगर में, गोपीनाथ श्री था जन्मा।।2।।
पितामह श्री लक्ष्मण जू, भान श्रेष्ठ परिवार से रहे।
ड़ोगरा शासन में वजीर–वजारत के पद पे थे रहे।।3।।
पिता श्री पंड़ित नारायण, जू तो ईश्वर कोटि थे।
व्यापार ऊन पश्मीने का, कारोबार किया करते थे।।4।।
अधिक समय तक धार्मिक कार्यों में व्यतीत किया करते थे।
लक्ष्य मनुष्य का जो भी श्रेष्ठ, जीवन सफल बना करते थे।।5।।
भगवान की माता हार माली महिला धर्मज्ञ बड़ी रही।
पंड़ित प्रसाद जू पारिमू की, एक पुत्री थी रही।।6।।
पंड़ित पारिमू जू को तो, जड़ भरत था कहा गया।
नहीं कोई अपनी संतान, दत्तक था बनाया गया।।7।।
आद्य भवानी के दर्शन को, तुला भुला थे चले गये।
श्रद्धा और भक्ति में वे तो, समाधिस्थ थे हो ही गये।।8।।
भगवती प्रकट हो गई, बाल गोद लेने पर झिड़का।
करो प्रतीक्षा माँ स्वयं, गर्भ में आने वाली है कहा।।9।।
चंद दिनों के बाद ही माता, को गर्भ था ठहर गया।
भाग्य शालिनी गोपी माँ, बनने को था जन्म लिया।।10।।
गोविंद और जियालाल जी, गोपीनाथ के भाई रहे।
दो बहनें जानकी और देवमाली उन्हें कहे रहे।।11।।
बारह बरस की आयु में, माता श्री का निधन हो गया।
पिता श्री का साया उनपर,बत्तीस वर्ष तक बना रहा।।12।।
भगवान पढ़े केवल मिडल स्तर, लेकिन उनके द्वारा तो,
अंग्रेजी वाक्यों का सुंदर, उच्चारण था श्रेष्ठ रहा।।13।।
देवनागरी में गोपी जी, शारदा लिपी में माहिर थे रहे।
प्राचीन शैली संस्कृत, भी पढ़ते लिख लेते रहे।।14।।

बचपने में तो उनकी, संस्कृत में बड़ी ही रूचि रही।
सुंदर प्रभावी ढ़ंग से, श्लोक उच्चारण शैली रही।।15।।
प्रारम्भिक जीवन में उनको, नही किसी ने था सिखलाया।
भवानी सहस्त्र नाम इन्द्राक्षी, भी थी कंठस्थ कराया।।16।।
पंचस्तवी और विष्णुसहस्त्रानम को कंठस्थ किया।
शिवस्तोत्रवाली और, अनेक ग्रंथों को कंठस्थ किया।।17।।
जब कभी भी भगवान श्री अनुकूल भाव में रहे होते।
कश्मीर संतों के 'वाक', सुनाते—पाठ किये होते।।18।।
श्रीमद् भागवत् गीता में तो इनकी, बडी अपार रूचि थी रही।
महान ग्रंथ में जीवन भर, श्रद्धा इनकी थी बनी रही।।19।।
जितने भी ग्रंथों को पढ़ा, बचपन में ही थे पढ़े रहे।
केवल विद्वान संतों के, सत्संगों में वे जाते रहे।।20।।
जीविका को कमाने हेतू सम्बंधियों ने बाध्य किया।
साथ में माता श्री, चाचा के, पश्मीना उद्योग सहयोग किया।।21।।
माधवराम स्टीम प्रैस में, कम्पोज़ीटरका काम किया।
'दास दारज' खत्म हो गये, कहकर काम था छोड़ दिया।।22।।
भगवान श्री ने चाय दब में, निजी काम था शुरू किया।
किरयाना दुकान सेकीडाफर, में था शिफट किया गया।।23।।
दस साल लंबे अरसे तक, कारोबार था किया गया।
दुकान पे रहकर भी ध्यान में, अधिक समय व्यतीत किया।।24।।
गोपीनाथ श्री जी तो, दुकान में कम बोलते थे।
कभी—कभी रात में भी, रहकर ध्यान मग्न तो रहते थे।।25।।
भगवान श्री गोपीनाथ के, गुरु को किसी ने नही देखा।
दीक्षा लेते हुये किसी ने, भब जी को नहीं देखा।।26।।
रिश्तेदारों सम्बंधियों ने, था केवल इतना ही बताया।
पंडित नारायण जू भान पिता, से दीक्षा था ग्रहण कराया।।27।।
छोटी बहन जानकी देवी ने, था इक बार मात्र यह कहा।
कश्मीरी संत बालक जू काव, था उन का तो गुरु रहा।।28।।
कभी कभी तो गोपीनाथ जी, करफली मौहल्ला जाते थे।

महान संत काक तुफची के, घर तो भगवान जाते थे।।29।।
आफताब जू वांगनू के, घर रहकर भी रहते थे।
भगवान श्री स्वामी जी, ज़ना काक के घर जाते थे।।30।।
हर शनिवार को गोपीजी, भजन मंडली में जाते थे।
गुरु गीता और 'वाक पाठ' का, पाठ कराया करते थे।।31।।
स्वामी ज़नकाक जी के तो, ज्ञात शिष्यों में वे नही थे।
हो सकता है गुप्त रुप में, किसी से दिक्षित हुये थे।।32।।
इनके महा निर्वाण से पहले, एक भक्त ने इनसे पूछा।
भगवान आपके गुरु कौन, सिर झुका के था पूछा।।33।।
महापुरुष ने भगवत् गीता, की ओर संकेत, कर दिया।
ईश्वर सत् आत्मा गुरु है, गोपीनाथ जी ने कह दिया।।34।।
संत आज तक जितने भी, कश्मीर में तो हुये हैं।
केवल वे ही जीवन काल में, भगवान पुकारे हुये हैं।।35।।
इनके जीवन काल में इनका, इतना मान किया करते थे।
लोग उन्हें 'बब' कह करके, तो पुकारा करते थे।।36।।
गोपीनाथ श्री जी ने अपने, जीवन काल में जो था किया।
सर्वोच्च स्थिति चित्त की, को उन्होंने था प्राप्त किया।।37।।
वे सदा ही परमात्मा में, तल्लीन रहा करते थे।
शायद इसलिए उनको तो, भगवान कह पुकारा करते थे।।38।।
घाटी में भगवान जी ने, सब देव स्थानों के दर्शन किये।
कहीं थोड़े कहीं ज्यादा, समय के लिए थे रहा किये।।39।।
हारि पर्वत शारिका भगवती, अस्थापना तो वहां हैं।
श्री राम जू और नील कौल, को तो दर्शन कराया है।।40।।
तुलामुला में खीरभवानी, आद्यभगवती दर्शन किये।
तीन चार मास तक वे, भगवती स्थान पर रहा किये।।41।।
दक्षिण पूर्व में ज्वाला मुखी, पीठ तो खिृव में रही।
भगवान की उपस्थिति हर वर्ष, तीन चार दिनों तक यहां रही।।42।।
एक बार खाना कहा था, तीन चार लोगों के लिये।
उस समय में पचास लोग, खाने को थे बैठ ही गये।।43।।

आश्चर्य हुआ जब डेग में ही, सब के सब भोजन किये रहे।
फिर भी ड़ेगची में भोजन, था देखा बचा किये रहे।।44।।
भद्रकाली पीठ हंदवाडा, चमत्कार था, दिखलाया।
अमृतानंद और बहन छोड़, सब वापस था लौटाया।।45।।
उत्तर से आने वाले तो, सब तूफां में उड़ जायेंगे।
इसके बाद चीन हमले से, सब तबाह हो जायेंगे।।46।।
ज्येष्ठा भगवती पीठ पर, भगवान श्री जी थें।
संकेत दिया ठीक हो गया, महाराजा जी थे चले गये।।47।।
साधु एक था आया हुआ, प्रशाद चढ़ाने पर क्रुध हुआ।
"पयनय शुतुलबुड" भगवान जी, के द्वारा था कहा हुआ।।48।।
ज्वर चढा और साधु को तो, चेचक भी निकल आई।
पीठ से जाने से साधु कहा, थी उससे भी क्षमा मँगाई।।49।।
गुप्त गंगा निशात के पास, उनका जाना था वहाँ हुआ।
तुष्कराज भैरव बटमालू, में भी था उनका जाना हुआ।।50।।
उमापति महादेव स्थान, वो तो थे अमरनाथ गये।
हांगुल गुंड़ स्वामी मिर्जा, काक जी समाधि गये।।51।।
मन पवित्र था शरीर पवित्रता, गौर नहीं महापुरुष किया।।
जीवन में दो बार महापुरुष, ने केवल स्नान था किया।।52।।
एक बार तो खीर भवानी में, उन्होंने था स्नान किया।
जहां सभी यात्री पूजा पर्व, था सबके साथ स्नान किया।।53।।
एक बार सन चौसठ में तो झील–डल थी जमी गई।
शीत लहर से घाटी सारी में, त्राहि त्राहि थी मच गई।।54।।
तब भगवान श्री जी ने, चंदपोरा में स्नान किया।
पिघलती बर्फ और लहर को, शीघ्रता शीघ्र समाप्त किया।।55।।
हर मास में एक बार, सिर के बाल कटवाते थे।
भक्त जन उनके शरीर में मालिश तेल की करते थे।।56।।
महा निर्वाण से कुछ दिन पहले, उन्होंने इक बार कहा।
तेल पर्याप्त है त्वचा में, कहकर उनको रोक दिया।।57।।
शरीर पे केवल पशमीने, की फिरन पहना करते थे।
नीचे से केवल लंकलाट, भगवान पहना करते थे।।58।।

अंतिम दिनों में कमीज़ हाफ कोट, अन्धर से पहना करते थे।
फिरन पहनते कांगड़ी से भी अग्नि तो तपते थे।।59।।
प्रातःकाल में एक बार, चाय देशी कहवा लेते थे।
एक बजे दिन के चावल, और सब्जी वे तो लेते थे।।60।।
जो कुछ भी था दिया जाता, सहर्ष स्वीकार कर लेते थे।
व्हिस्की ब्रांड़ी श्रद्धा से, मादक द्रव्य ले लेते थे।।61।।
जब भी पेय को पीते रहते, हिलते वह तो रहते थे।
जीवात्मा को आवृतिक, आवरण निकाला करते थे।।62।।
उपवास भगवान श्री का, जीवन का वह तो अंग रहा।
एक बार तीन छैः मास का, उनका था उपवास रहा।।63।।
शारिका भगवती पीठ पर, राम जू के घर वे थे रहे।
लगातार तैंतीस दिनों तक, उपवास वे तो थे किये रहे।।64।।
अध्यात्मिक मार्ग पर चलकर, अल्पहारी मिताहारी थे।
उपवास वास्तव में कर के, क्षुधा को जीतनहारी थे।।65।।
भगवान जहाँ भी रहते, धूनी रमाया करते थे।
रोगी जो भी पास आता, धूनी से भस्म दिया करते थे।।66।।
मधुमेह और खून बीमारी, के अक्सर रोगी आते थे।
मस्तिष्क विक़ार और कैंसर रोगी, ठीक हो जाया करते थे।।67।।
रोगी कोई भी कैसा भी हो, उपचार हो ही जाता था।
जो भी उनके पास पहुँचता, ठीक हो के तो जाता था।।68।।
लोगों के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्यक्ष नहीं वे देते थे।
परोक्ष रूप में सन्तुष्ट, सब को ही वे कर देते थे।।६६।।
कोई भी व्यक्ति जो उनके पास, स्वयं ही वह आता था।
नहीं माँगते कुछ भी वे तो, स्वयं ही देकर जाता था।।70।।
धन फल फूल मीठा, जो कुछ भक्त दे जाते थे।
जितने भी वहां आते थे, प्रसाद रूप पा जाते थे।।71।।
सौ पचास दस बीस के नोट, जो भी देकर के जाते थे।
सबको एक रूपये के नोट, में बदलवा वे लेते थे।।72।।
अमरनाथ यात्रा को कोई, भी साधु जो था आता।
आता साधु एक रूपये का, नोट तो वह पा जाता।।73।।

श्रावण मास में अमरनाथ, यात्रा की अवधि में आते।
सौ सौ साधु एक साथ ही, भगवान के पास आते जाते।।74।।
साधना काल में साधु के, भगवान सदा मस्त रहते थे।
दृष्टि स्थिर किये हुए , चिल्म पीते ही रहते थे।।75।।
भगवान गोपीनाथ श्री जी, संत तो कहे जाते थे।
लेकिन कभी भी धार्मिक, प्रवचन नहीं वे देते थे।।76।।
स्पर्श मात्र से गोपीनाथ जी, ठीक रोगियों को करते थे।
चिल्म की भस्म को देकर के, रोग शांत किया करते थे।।77।।
उनिसो सैंतालिस पाकिस्तान, हमला वह था किये रहा।
लोग भगवान के समीप, घबरा के था आया रहा।।78।।
आने वाले जिज्ञासुओं को, प्रसाद दिया वे करते थे।
जिज्ञासु को अध्यात्म में, प्रवृत किया वो करते थे।।79।।
आश्वासन भगवान श्री ने, जनता को था दे ही दिया।
नगर प्रवेश हमलावर, का नहीं कभी भी किया गया।।80।।
भगवान श्री का इलहाम, आखिर को था सत्य हो गया।
सेना द्वारा छत्ताबल चुंगी, पर ही था रोक दिया गया।।81।।
हमले से दो माह पूर्व, भक्तों को था संकेत दिया।
सारा सामान बारामूले से, निकालने को था कह दिया।।82।।
पाकिस्तान द्वारा हमला, जबरदस्त था किया गया।
पूरा का पूरा बाराबूला, नेस्तो नाबूद किया गया।।83।।
हारी पर्वत शारिकापीठ, स्थापन को थे आए गए।
नहीं कुछ होगा खतरा तो, लोगों को थे बता गए।।84।।
भगवान सीमा पे जाते, सेना को निर्देश देते थे।
विजय श्रेय कमाण्डर तो, महापुरूष को ही देते थे।।85।।
प्रत्यक्ष रूप में भगवान श्री का, शरीर तो था कही होता।
परोक्ष रूप में ही तो, वो सीमा पे कार्य किया होता।।86।।
चूनी लाल की पत्नी तो, ल्यूकोमिया से पीड़ित थी।
भगवान श्री की भस्म से, पूरी तरह अपीडित हुई थी।।87।।
एक नहीं अनेको उदाहरण, वहां पर थे देखे जा रहे।

तन की खबर नही जिनको, ठीक वह थे हुए जा रहे।।88।।
भगवान श्री गोपीनाथ जी, बहुत ही कम बोलते थे।
भगवान स्वरूप में वे जो, सदा मस्त ही रहते थे।।89।।
जन्म जात दिव्य सद्लक्षण, उनमें तो थे देखे जा रहे।
सताईस वर्ष अल्पायु में, देवी माँ दर्शन किये रहे।।90।।
भगवान सदा ही निजानन्द अवस्था में ही रहते थे।
शरीर त्यागने से पहले, ॐ नमः शिवाय कहते थे।।91।।
जब भी उनपे नजर पड़ी, धूम्रपान करते रहते थे।
साथ साथ इनके तो वे, पाठ भी करते रहते थे।।92।।
भावात्मक प्रार्थना को, कर्मों में स्थान नहीं रहा।
कर्मों में विश्वास करने वाला महापुरूष उन्हें कहा।।93।।
भगवान श्री जी ईश्वर के, साक्षात्कार को था किया।
गृह त्याग का उपदेश कभी, भक्तों को था नहीं दिया।।94।।
संसारी व्यक्ति को भी तो, वैराग्य को पाना सरल कहा।
उच्च साधना की अनुभूति, अगर प्रयास से किया रहा।।95।।
गुरु कौन है आप श्री को, भक्त एक ने प्रश्न किया।
व्यक्ति का गुरु आत्मा, भगवत गीता को कह दिया।।96।।
अंतिम समय भगवान श्री, निर्बल बहुत ही हुए गए।
खीर भवानी चरणों में, जाने की चाहत किए गए।।97।।
जनेन्द्रियों में सूजन थी, शरीर का क्या होगा?
टुकडे टुकडे ही नष्ट होगा, और इसका क्या होगा।।98।।
भगवान श्री की साधना, शक्ति प्रबल थी हो गई।
सूजन अतिशय पूर्ण ढंग से, लुप्त सर्वत्र हो ही गई।।99।।
जब कभी उनको ज्वर, अथवा अन्य रोग कोई होता।
उबली कहज़बान पत्ती, इसके अलावा कुछ न लेता।।100।।
लोहे की तश्तरी में भांग, उबाले गोले थे बनाते।
सुखाकर चिल्म में रखकर, प्रयोग थे किए जाते।।101।।
प्रत्येक रविवार को, संगीत का आयोजन होता।
निरंतर अभ्यास चला रहा, छब्बीस मई था बंद होता।।102।।

अठाईस मई उन्नीसों अठासठ, उनका था निर्वाण हुआ।
पाँच पैंतालिस सायं को, महा समाधि प्रवेश हुआ।।103।।
उन्नतिस मई दिव्य ज्योति, तत्वों में विलीन हो गई।
अस्थियाँ शादीपुर में, विसर्जित थी कर दी गई।।104।।
भगवान जी की सुगन्दि, अब तक जन जन में है व्याप्त रही।
उनके आशीषों की विभूति, सबके मस्तक को सजा रही ।।105।।
भगवान जी का आशीर्वाद, भक्ति से उनको प्राप्त होगा ।
सच्चे दिल से, उनको सिमरन कर जीवन में सुख प्राप्त होगा ।।106।।
महाराज श्री की महाजयन्ती, हार्दिक श्रद्धांजली उन्हें रही ।
भगवान जी से क्षमा याचना, हृदय में कामना है रही।।107।।
जो भी व्यक्ति इस माला को निस्वार्थ प्रकाशन कराएगा ।
सुख, शान्ति, वृद्धि, सिद्धि को अवश्य ही वो तो पायेगा ।।108।।

भगवान गोपीनाथ शतक

अध्यात्मिक परोक्ष संतस्वरूप को श्रद्धांजलि

रचियता :

श्रेयांश कुमार जैन

09419100743

Published by :

Jagat Guru Bhagavaan Gopinath Ji Charitable, Cultural and Research Foundation

1/B, Dayalsar Road, (Near Mother Optical)
Bank of Baroda Lane, Metro West,
Uttam Nagar, Pillar No. 691, New Delhi-110059

OUR PUBLICATIONS

1. "The Saint Extra-ordinary, Bhagavaan Gopinath Ji" by Sh. T.N. Dhar, 'Kundan'
   Hard Bind = Rs. 150.00
   Paper Back = Rs. 100.00
2. " Lord Gopinath, Brevity His Beauty" by Sh. B.L. Kak, (Journalist)
   = Rs. 50.00
3. सद्गुरूदेवस्य नामावली (प्रो. मखनलाल कुकिलू, डा. चमन लाल रैणा) रू 35.00
4. Bhagavaan Gopinath-Akaid-O-Afqar (Urdu)
   By Dr. Premi Romani =Rs. 50.00
5. 'भगवान गोपीनाथ जी एक विलक्षण संत' अनुवादक श्री दिलीप कुमार कौल रू 100.00
6. "Prakash Bhagavaan Gopinath", a multilingual, quarterly Journal (some back issues also available) edited by Dr. B.L. Pandit
   =Rs. 20.00 (each issue)
7. 'क्षमा–अष्टक' लेखक श्री चमन लाल राज़दान रू 5.00
8. टाठि बबस 'आलव' लेखक श्रीमती रानीकौल रू 5.00
9. श्री गुरूपादुकास्तुति रचयिता–प्रो. मखनलाल कुकिलु रू 5.00
10. प्रातः आराधना सम्पादक–श्री प्राण नाथ कौल रू 5.00
11. दो अन्मोल रत्न–(नामावली, गुरू गीता) रू 5.00
12. पूजा संग्रह (आरती, जपमाला, गुरूपादुका स्तुति, भगवान चालीसा) रू 10.00
13. Casettes and CD - sung by Sh. Ashok Raina also available रू 30.00 से 50.00 तक
14. भावु सोदुर – प्रो० शीला नकैब, पृथ्वीनाथ कौल 'सायिल' रू 100.00